(जिला स्तरीय मौसम पूर्वानुमान आई.एम.डी.,नई दिल्ली के आधार पर तैयार की गई)

चौ.स.कु. हिमाचल प्रदेश कृषि विश्वविद्यालय, पालमपुर-176062

हिमाचल प्रदेश

सस्य, चारा एवं चारागाह प्रबन्धन विभाग, कृषि महाविद्यालय

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा विज्ञप्ति क्र. 2017/09/Him/Kan/3

जिलाः कांगडा **दिनांकः 12 सितम्बर 2017**

www.hillagric.ac.in/info/kisano_ke_liye_soochna, email: ranars66@rediffmail.comPh.No. : +91-1894 232245
Fax: 91-1894 230406

आगामी पाँच दिनो का मौसम पूर्वानुमानः–

Past Weather							
Temperature	Max temperatures were 1-2 Deg.C.above normal						
	Highest Temp	Dharmsala:27.8 Deg.C 11th Sep.					
	Min temperatures1-2 Deg.C below normal						
	Lowest Temp	Dharmsala: 16.4 Deg. C on 10th Sep.					
Precipitation in (mm)	Rainfall occurred at many places in the district.						
	Date	**07th**	**08th**	**09th**	**10th**	**11th**	**12th**
	Dharamshala	22.2	8.2	0.0	14.8	0.0	0.0
	Ghamroor	20.5	0.0	0.0	0.0	9.0	0.0
	Guler	13.5	0.0	0.0	0.0	0.0	0.0
	N. Suriyan	4.5	0.0	0.0	1.6	0.3	0.0

Weather Forecast						
Weather Parameter/Date		**13th**	**14th**	**15th**	**16th**	**17th**
Rainfall (mm)		3	3	3	3	3
Temp (C)	**Max**	28	28	28	27	27
	Min	17	17	17	16	16
Cloud (Octa)		7	7	7	7	7
Humidity (%)	**Morning**	90	92	91	88	89
	Evening	55	56	61	62	60
Wind speed (kmph)		8	9	8	9	8
Wind direction		ENE	ENE	ENE	ENE	ENE

जिले के अलग अलग क्षेत्रों में ब्लाक स्तर पर पिछले सप्ताह में **6.4 से 45.2** मिली मीटर वर्षा दर्ज की है और तापमान से 16.4 से 27.8 ^{0}C रहा है

इस हफ्ते के लिए उक्त जलवायु के हिसाब से निमं कृषीय सलाह दी जाती है अगले पांच दिनों में **15** मिली मीटर वर्षा की संभावना है अधिकतम तापमान 27 ^{0}C से 28 ^{0}C और न्यूनतम तापमान 16 से 17 ^{0}C के बीच रहने के संभावना है. हवाओं की गति 8 से 9 किलोमीटर प्रति घंटे के हिसाब से चलेंगी. सापेक्षित आद्रता लगभग 55 से 92 प्रतिसत के बीच रहेंगी

अधिकतर बादल छाये रहेगें

मुख्य फसलें	अवस्था	कीट/ विमारियां व अन्य	कृषिय सलाह
खरीफ फसलें	वानस्पतिक वृद्वि		धान के खेतों की मेंडो को मजबूत बनाये। जिससे वर्षा का ज्यादा से ज्यादा पानी खेतों में संचित हो सके. धान में झुलसा रोग की संभावना होती है उपचार हेतु बाविस्टिन 1.2 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोल या blitox 50 को ३ ग्राम पानी प्रति लीटर पानी कर 15 दिन के अन्तराल पर छिड्काब करें. धान की फसल में इन दिनों काले रंग के छोटे छोटे कीट (हिस्पा) के आने की संभावना होती है उपचार हेतु 1 मिली लीटर metacid 50 EC प्रति लीटर पानी में घोल कर छिडकें. धान की फसल में पत्ता मरोंड तथा तना छेदक के लिए करटाप दवाई 4% दानें 10 किलोग्राम/एकड़ का बुरकाव करें।

			मक्का में तना छेदक की रोकथाम के लिए पोधों में थिमेट 10-G के दाने डालें. मक्का में तना सडन के लिए 16.5 किलो ग्राम ग्राम ब्लीचिंग पाउडर प्रति हेक्टेयर की दर से रोग्ग्रशत पोधों के पास मिटटी में मिलाएं
दालें	वानस्पतिक खरपतवारों का नियंत्रण		खरीफ की सभी फसलों में खरपतवारों का नियंत्रण करें। इससे खरपतवारों द्वारा फसलों को कम हानि होती है तथा जल की बचत होती है और जड़ों का विकास अच्छा होता है। तिल व माश में बालों बाली सुंडियां बिहुत नुकशान पहुछाती हैं रोकथाम के लिए 25 EC Cypermethrin 0.5 मिली लीटर प्रति लीटर पानी के घोल का छिड्काब कीट की छोटी अवस्था में करें और साथ में स्टीकर का प्रयोग भी करें सोयाबीन, मूंग, उडद फसल में सफ़ेद मक्खी, चूसक कीटों के प्रकोप हेतु इमिडाक्लोप्रिड दवाई 1.0 मि. ली./3 लीटर पानी या थायामिथोजाम 25 दानें @ 40 ग्राम/एकड़ पानी में मिलाकर छिड़काव आसमान साफ होने पर करें।
घासनियों	वानस्पतिक		घसिनियों में जहाँ कटाई लेते हैं फूल आने की अवस्था से पहले काट कर सुखा लें इस घास की गुणवता अधिक होती है
ऊँचे पर्वतीय क्षेत्र			ऊँचे पर्वतीय क्षेत्रों में ओगला फफरा राजमाश मटर पालक गोभी की फसल में निरही गुडाई करें व खरपतवार नियंत्रण करें .
सब्जी उत्पादन	हानिकारक कीटों का नाश करने के लिए किसान भाई प्रकाश प्रपंश) Light Trap) का भी इस्तेमाल कर सकते है। इसके लिए एक प्लास्टिक के टब या किसी बड़े बरतन में पानी और थोडा मिट्टी का तेल या थोडा रोगोर मिलाकर एक बल्ब जलाकर रात में खेत के बीच में रखे दें। प्रकाश से कीट आकर्षित होकर उसी घोल पर गिरकर मर जायेंगें। इस प्रपंश से अनेक प्रकार के हानिकारक कीटों का नाश होगा		
सब्जी उत्पादन	निराई व गुड़ाई		कद्दूवर्गीय सब्जियों (लोकी, टिंडा, तूरई, सीताफल, ककड़ी, करेला, तरबूज, खरबूजा आदि) की निराई व गुड़ाई कर सकते है। कद्दूवर्गीय सब्जियों में बेलों को ऊपर चढाने की व्यवस्था करे ताकि वर्षा से सब्जियों की लताओं को गलने से बचाया जा सके तथा जल निकास का उचित प्रबन्ध रखें।कद्दूवर्गीय सब्जियों में फल मक्खी की रोकथाम केलिए मिथाइल यूजीनोल ट्रेप के द्वारा कर सकते हैं। फल मक्खी के लक्षण पाये जाने पर इमिडाक्लोप्रिड़ 30.5 SL @ 0.25 मि.ली प्रति ली .पानी में मिलाकर 50 लीटर प्रति हैक्टर की दर से छिड़काव आसमान साफ होने पर करें. टमाटर, मिर्च, बैंगन फूलगोभी व पत्तागोभी में फल छेदक, शीर्ष छेदक एवं फूलगोभी व पत्तागोभी में डायमंड बेक मोथ के लिए स्पेनोसेड दवाई 1.0 मि. ली. / 4 लीटर पानी में

			मिलाकर छिड़काव आसमान साफ होने पर करें.भिंडी, मिर्च तथा बेलवाली फसल में माईट, जैसिड और होपर की निरंतर निगरानी करते रहें। अधिक कीट पाये जाने पर इमिडाक्लोप्रिड़ 17.8 SL @ 0.5 मि.ली./लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव आसमान साफ होने पर करें । मिर्च के खेत में विषाणु रोग से ग्रसित पौधों को उखाड़कर जमीन में गाड़ दें। उसके उपरांत इमिडाक्लोप्रिड @ 0.3 मि.ली./लीटर की दर से छिड़काव करें।
फूल गोभी			टमाटर, मिर्च, बैंगन फूलगोभी व पत्तागोभी की पौध तैयार है, तो मौसम को ध्यान में रखते हुए रोपाई मेड़ों(उथली क्यारियों) पर करें। खरपतवार नियंत्रण के लिए रोपाई से पहले अपने खेतों में पेनडामिथायलीन @ 2.75 किलोग्राम(ए.आइ)/ हैक्टर 600 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव आसमान साफ होने पर करें ।
पाली होउस खेती	बनस्पति और फल अवस्था		टमाटर में पता धब्बा रोग की रोकथाम के लिए टिल्ट नाम के दबाई का छिड्काब करें. पहले लगे टमाटर में दो टहनियों रख कर बाकि की कटाई व छंटाई करें. पोलीहोस में माइट्स के बचाब हेतु 10 मिली लीटर Prorazite 57 EC या Spiromeciphen 22.9 SC 10 लीटर पानी में घोल कर छिड्काब करें . छिड्काब के एक सप्ताह बाद ही सब्जिओं को तोडें .पोलिहोसे हाउस में सफल खेतीं के लिए निचले व मध्यम पर्वतित्यों क्षेत्रों में जरूरत दिन में 50 प्रतिशत छायादार जालों का प्रयोग करें ताकि तापमान का नियंत्रण हो सके. हबा की निकासी का प्रवन्ध करें .पालिहोस में spodoptera तम्बाकू सुंडी का प्रकोप की सम्भावन है पतंगे को अदंर न आने दें. वर्षा के समय साईड की बेंट को बंद रखें और बाद में खोल दें
मशरूम	डिंगरी मशरूम पैदाबार		बंद कमरे में खुम्ब उत्पादन (डिंगरी) के लिए जलवायु उचित है डिंगरी की फसल के लिये कमरे का तापमान 22-24 डिग्री सेल्सिस तक वनाये रखें और पानी भी छिडकें ताकि कमरे में नमीं 80 से 85 प्रतिशत वनी रहे
पशुपालन मवेशी भेड़ बकरी इत्यादी		डीवार्मिंग	गलघोटू ब लंगड़ा बुखार के लिए पशुओं को टिका लगवा दें .पशुओं के जगह को सुखा रखें. दाना मिश्रण में उर्जा की मात्रा २-३ प्रतिसत बड़ा दें. जुओं चिचाडों से बचें हेतु butox २ मिली लीटर प्रति लीटर पानी के हिसाब से पशुशाला में छिडकें . पशुओं को साफ पानी दें. पशुओं को लाल फूल्नु को खाने से बचाएँ
मुर्गीपालन		आहार	मुर्गियों को बीमारियों से बचाने के लिए मुर्गीघरो में नमी मत होने दे । मुर्गीघरो में डीप-लीटर को दुसरे-तीसरे दिन उलट दे, ताकि बीमारी न फैले । ब्राईलर को लगातार फीड देते रहे । फफूंदी आदि लगी आहार को न दें जिस में टोक्सिन होते हैं और अण्डों को पैदाबार कम हो जाती है
चाय	तुडबाई		पत्ती की तुडबाई ठीक स्तर पर करें ताकि अच्छी प्रतिशता मिले जहाँ कहीं छाया हो पोधों को की काट छांट कर दें ताकि पोधों को

			अच्छी धुप मिले मिली बग आने पर उपचार करें .
फल उत्पादन	पोध संरक्षण		ऊँचे क्षेत्रों मों सेब के पेड़ से फलों का गिरना प्राकृतिक क्रिया है अधिक फल होने के अवस्था में ही फल गिरते हैं. नींबू, आम, किन्नों आदि में वृक्षों के टोलियों बनाएं और खरपतवार नियंत्रण करें.निम्वु में कैंकर के बचाव हेतु streptocyclin सलफेट 500 एग्रोम्य्सं पीपीएम या agromycin का छिद्काब करें.पोधों के निचे निकली कोम्प्लों को नष्ट कर दें
मधु मक्खी पालन	असक्रिय	पोषण	मधु मक्खीयों के कमजोर गृहों को बनावटी खुराक 50 प्रतिशत चीनी व 50 प्रतिशत गुर का घोल बन कर दें . ततैईयों रिन्गलों से बचाब करें और फ़ाउल ब्रूड रोग के प्रति सचेत रहे. मौनालय के आसपास घास व खरपतवार नियंत्रण रखें. मौन गृहों को वर्षा से बचाएं
मछली पालन	पालन		मछलीयों के तालाब के चारों तरफ जाली बनाये ताकि अधिक बारिश कारण वो बाहर न निकल जाएं मछली पालने के लिए तालाबों में पानी की सतह 6 फूट तक बनाए रखें खुराक 4 प्रतिशत शरीरी के हिसाब से ५-६ बार डालें मात्रा शारीर के भार के बरावर के हिसाब से बड़ा दें तथा आधिक बादलों के दशा में कम आहार दें
पुष्प	फूल संरक्षण	माइट्स	माइट्स से बचाब हेतु स्प्पेर्मेथ्रिन 0.05 % 15 दिन के अन्तराल पर छिडकाव करें फूलों को क्यारियो. गुलाब की क्यारियों में सप्ताह के अंतराल पर निराई-गुड़ाई करें तथा सूखी टहनियों को काटे गेंदा की फूलों में थ्रिप्स आने के संभावना है उपचार हेतु Rogur या मेलाथियान १ मिलि/लीटर का छिद्काब करें गुलदाउदी,गेंदे की तैयार पौध की मेड़ों पर रोपाई करें। ग्लेडिओलस की बीजों द्वारा बुवाई इस समय करें तथा जल निकास का प्रबंन्ध अवश्य करें
आम जल प्रबंधन			वर्षा आधारित एवं बारानी क्षेत्रों में भूमि मे नमी संचयन के लिए पलवार(मलचिंग) का प्रयोग करना लाभदायक होगा. मक्का के खेतों में भुट्टे के निचे 5-6 पाटों को सम्पुरण भुमाणु निकलने के बाद निकलकर पशु चारा के लिए प्रयोग कर सकते हैं एस्सा करने से कम नमी में अच्छे पदावर होती है अच्छी पैदावार के लिए खेतों में खरपतवार नियन्त्रण को सुनिश्चित करें।

कृषि प्रसार निदेशक
चो० स. कु. हिमाचल प्रदेश कृषि विस्वविद्यालय] पालमपुर -176062
हिमाचल प्रदेश